204
855 (P)
H
Microfilm

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI.

Call No. ________

Accession No. ________

GIPNLK—7/DAND—5-9-60—15,000

1200
10/21

PL 220/831
NO 19 of Sept 41
Nai kajali sawan ...

नई कजली
सावन बमकश।

उर्फ़-भगतसिंह की फांसी
और बनारस के दंगे की नई कजली।

बनारस में पताका शायरी के
इनके फहरैका।

धूम दीजे यहाँ की
हमारे मारकन्डे के

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
29 FEB. 1932

रचइता—शायर मारकन्डे महाद्विज
शिवाला घाट, बनारस।

प्रकाशक—गौरीशंकर लाल,
औसानगंज, बनारस सिटी।

पुस्तक का सर्वाधिकार प्रकाशक को है। की० -)

991.431
M278 Sa

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 855
Date 23.12.71
GOVT. OF INDIA

* श्री *

सावन बमकेश

॥ कजली ॥ १ ॥

रच्छा करो शारदा मइया तेरी देउँ दोहइया ना ॥टेक॥ रन बन में नित संग रहत नित करत सहइया ना ॥ १ ॥ मात चरण पर नाय शीश नित लेउँ बलइया ना ॥ २ ॥ तू दंगल में पार लगावत हमरी नइया ना ॥ ३ ॥ पारकन्दे है दास तेरो कजरी के गवइया ना ॥

कजली ॥ २ ॥

धोखा देके धोखा बजवा फाँसी चढ़ाय देहलेस ना ॥ टेक ॥ भगतसिंह के बम के केश में फँसाय देहलेस ना ॥१॥ दरद न आवल फाँसी सांझ के लगाय देहलेस ना ॥ २ ॥ नाहीं देहलेस लहास

चुपके जराय देहलेस ना ॥ ३ ॥ मारकन्डे भारत के अइसन रोआय देहलेस ना ॥ ४ ॥

॥ भगतसिंह की कजली ॥ ३ ॥

पन्जाब देश का शेर बबर मरदाना सावर गोरिया॥ हो गया भगतसिंह मुल्क के अदमरवाना सावर गोरिया ॥ टेक ॥ लायलपुर के बंगा ग्राम में पैदा हुआ था ये नाहर । किशनसिंह का लड़का था तेइस चौबिस की रही उमर ॥ रहा जात का सिक्ख खौफ़ वीरता का था उसके दिलपर । अंगरेजी एन्ट्रेस पास था मगर जेहन में था बढ़कर ॥ वो इल्म बड़ा रखता था ॥ ना किसी से भी डरता था ॥ था अंगरेजी बोलने में पुरादाना सावर गोरिया ॥ १ ॥ जब गांन्धी के अन्दोलन का इस भारत पर जोर हुआ । उसी समय इस भगतसिंह के दिल में ऐसा कोर हुआ ॥ नौ जवान एक सभा बना करके सबसे एक ओर हुआ । लगा बड़ा खुरफात मचाने गौरमेन्ट तक शोर हुआ ॥

नित पुलिसों को धमकावे ॥ ना खौफ किसी का खावे ॥ यह आजादी पर ऐसा हुआ दिवाना सावर गोरिया ॥ २ ॥ देश भक्ति जब उबल पड़ी तो नाम पाया मस्ताने में । छपवा करके परचा लाल चिपकाने लगा हर थाने में ॥ कहता था तुम होशियार हो जाओ मेरे चेताने में ॥ अगर करोगे जुल्म तो बाकी रखेंगे हम नहिं ढाने में ॥ हर वक्त यही कहता था ॥ हर वक्त निडर रहता था ॥ हर राज पुलिस वालो को था समझाना सावर गोरिया ॥ ३ ॥ भगतसिंह जो फेंका था बम एसेम्बली की सुनो ज़िकर ॥ बड़े बड़े अंगरेज मिटिंग में जुटे हुये थे आ आ कर ॥ एसेम्बली के बैठक की जो भगतसिंह को मिली खबार ॥ ले करके बम घुसा बेधड़क बचा पहरे वालो की नजर ॥ बम फेंक के ऐसा मारा ॥ ना डर से किया किनारा ॥ बस इसी केश में पाया जेहलखाना सावर गोरिया ॥ ४ ॥ चला मुकदमा

5

जोर शोर जब भगतसिंह गिरफ्तार हुआ । सरे अदालत भगतसिंह का इस तरह्ा इजहार हुआ ॥ कहा भगतसिंह इस भारत के बरबादी पर ख्वार हुआ । करने को आजाद हिन्द यह भगतसिंह तैयार हुआ ॥ ना खौफ़ हमे एक पलकी ॥ चाहें होय सजा उमर की ॥ है आजादो में डुबा हमारा बाना सावर गोरिया ॥ ५ ॥ इसी तरह का बयान जब हाकिम ने सब सुन पाया है ॥ ताबे उम्र काले पानी की उसको सजा सुनाया है ॥ फिर पीछे खड़यन्त्र केश लाहौर का जिसदम आया है ॥ दिया हुक्म फांसी का फिर तो जरा तरस नहि खाया है ॥ तारिख बाइस को भाई ॥ फांसी की सजा सुनाई ॥ हुआ मुकर्रर वक्त जान का जाना सावर गोरिया ॥ ६ ॥ भगतसिंह के बाप किशनसिंह ने अपील फिर कर वाई । लाठ किये खारिज़ अपील क्या खूब गजब की दुखदाई॥समझौते को अरबिन साहब नेजो आसा

दिखलाई । तो फिर एक दरख्वास प्रजा मिल करके सब ने लगवाई ॥ क्या खूब कर दिये राजी ॥ करवाके धोखे बाजी ॥ था तरस जरा भी उनके दिल में आना सावर गोरिया ॥ ७ ॥ करवा करके गजब तेइस तारिख के सबको रोला दिया । सात बजे के वक्त साम को फाँसी उनको लगा दिया ॥ राजगुरु सुखदेव भगतसिंह पर क्या आफत ढहा दिया ॥ चुपके से मट्टि का तेल छिरका पीछे से जला दिया ॥ क्या गजब किया अन्याई ॥ नहि लास किसी ने पाई ॥ क्या कहने को रह गया एक अफसाना सावर गोरिया ॥ ८ ॥ होत सबेरा हिन्दुस्तान में शोर सुनो ततकाल हुआ । शोक छा गया भारत में बस सभी जगह हरताल हुआ ॥ समझौते के मोके पर अन्याय सभी को ख्याल हुआ । हाय सितम आजादो पर भारत का पुत हलाल हुआ ॥ क्या हुआ उपद्रव भारी ॥ जो मरे बीर बलधारी ॥ कहे मारकन्डे महराज बनाके गाना सावर गोरिया ॥ ९ ॥

7

॥ कजली ॥ ४ ॥

फाँसी पड़के भगतसिंह सुरपुर किये सफरिया ॥ खबरिया सुनी पवली ननदी ॥ राजगुरू भगतसिंह सरदार, और सुखदेव ये तीनो यार ॥ फाँसी देहल गइलन सँझा के पहरिया ॥ खबरिया सुनी पवली ननदी ॥ १ ॥ बीतल दीन भयल जब रात ॥ सुनली बजल रहल तब सात ॥ कुबेरा नाही देखलेस नऊलेस हाय फँसरिया ॥ खबरिया सुनी पवली ननदी ॥ २ ॥ भारत भर हो गयल उदास ॥ नाही देहलेस उनकर लास ॥ नाय मटटी कै तेल जर वा देहलेस शरिरिया ॥ खबरिया सुनी पवली ननदी ॥ मरे तीनो भारत आजाद, हाय करतूत करीं जब याद ॥ गोइया रोय रोय के होल सुरुख नजरिया ॥ खबरिया सुनी पवली ननदी॥४॥ दिल से हम जैकार मनइबै, कजरी भगतसिह कै गइबै॥ गोइया मारकण्डे शायर के छपल कजरिया॥ खबरिया सुनी पवली ननदी ॥ ५ ॥

॥ कजली ॥ ५ ॥

अइसन मुसलमान हिन्दू में भयल लड़ाई ऐ गोइयाँ ॥टेक॥ आठरोज तक रहल कठिन दुख दाई ऐ गोइयाँ ॥ १ ॥ शहर बनारस मे भी आफत आई ऐ गोइयाँ ॥ २ ॥ मालुम देला नाही जल्द भुलाई ऐ गोइयाँ ॥ ३ ॥ मारकन्डे आपस में भयल बुराई ऐ गोइयाँ ॥ ४ ॥

बनारस के दंगेकी कजली ॥ ६ ॥

क्या शहर बनारस में भी आफत आई मोरे बलमू ॥ जो मुसलमान हिन्दू में भयल लड़ाई मोरे बलमू ॥टेक॥ पश्चिम पटरी मैदागिन पर एक आगा की रही दुकान । बस्त्र बिदेशी बेच रहा था शुदेशी का करके अपमान ॥ होय रही थी नित्त पिकेटिंग मगर मानता था नही खान । इसी बिसय पर किसीने भरके गोली उस पर मारा तान ॥ बस उस आगा के मरते ॥ नहि देरी जोश उभरते ॥ कि सबने उस आगा

की लास सजाई मोरे बलमू ॥ १ ॥ जलूस निकली उस आगा की खूब तरह सजवा के लास ॥ बढ़ते बढ़ते जुलूस पहुँची नीची बाग के जिस दम पास ॥ दिया किसी ने फेंक कंकड़ी उस जुलूस के उपर खास । लूट पाट फिर मची जोर से होने लगी क्या सत्यानास॥क्या मची उपद्रव भारी॥ जब लूट हो गई जारी ॥ बस दुकान केतनी उस दम गई लुटाई मोरे बलमू ॥ २ ॥ शोर होते ही भई भगौवल बन्द दुकान होगई चटपट ॥ हुआ बहुत नुकसान शहरमें आन पड़ी ऐसी झन्झट ॥ उसी रोज से मार काट होगई शुरू औ घबराहट । लगा जान बहुतों का जाने लगा शहर होने चौपट ॥ फिर डन्डा तेग भुजाली ॥ कही भाला औ दो नाली ॥ क्या चलन लगी फिर अस्पताल गरमाई मोरे बलमू ॥ ३ ॥ मुसलमान हिन्दू का कहि पाके चटमार गिराते थे ॥ कही पै हिन्दू मुसलमानको मुल्के अदम पठाते थे ॥ कहा तलक

से कहे कि घर में भी सब आग लगाते थे ॥ बहुत लोग तो शहर के बाहर मकाँ छोड़ भगजाते थे । क्या आन पड़ी दुखदाई ॥ गई फैल सनसनी भाई ॥ डरपोक लोग तो घर में रहे लुकाई मोरे बलमू ॥४ कहा तलक से कहे हाल की अजब तरह का पड़ा अकाल । लोग बहुत भूखे मरते थे मिलता था नहि आटा दाल ॥ समझौता होता था रोज पर किसी को होता था न खयाल । कई रोज तक भई लड़ाई अजब हुआ काशी का हाल ॥ फिर रहीस सब घबड़ाये, एक भारी सभा कराये ॥ बस मुसलमान हिन्दू को दिये मिलाई मोरे बलमू ॥ ५ ॥ हौल इन्डिया में था कैसा शहर बनारस का जी नाम । मुसलमान हिन्दू में मिल्लत रही हमेशा से सर नाम ॥ सो क्या आफत आन पड़ी की हम भी हुये वैसे बदनाम ॥ सब देशो में हुई लड़ाई यहाँ न ऐसा हुआ था काम ॥ फिर क्या है रन्ज हटाओ, मिल्लत में ध्यान लगाओ ॥ यह मारकन्ड महराज कहे समझाई मोरे बलमू ॥ ६ ॥

11

॥ कजली ॥ ७ ॥

कइसन चलल बाय अबकी खद्दर कै सारी ये गोइयाँ ॥टेक॥ बिदेशी सारी कै खद्दर मुँह मारी ऐ गोइयाँ ॥ १ ॥ हमरे मनमें ओकर बसल किनारी ऐ गोइयाँ ॥ २ ॥ कजरी खेलब पहिन के अबकी पारी ये गोइयाँ ॥ ३ ॥ मारकन्हे के कजरी में लयदारी ये गोइयां ॥ ४ ॥

॥ कजली ॥ ८ ॥

अबकी बहार देई ई खद्दर कै सारी सावन में ॥टेक॥
कजरी खेलब बनके खद्दर धारी सावन में ॥ १ ॥
पहिन चलब दुर्गाजी अबकी पारी सावनमें ॥ २ ॥
बहार देई झुलत कदम के डारी सावन में ॥ ३ ॥
मारकन्डे खद्दर पहिनब हम झारी सावन में ॥४॥

॥ कजली ॥ ९ ॥

खद्दर कै सारी ये गोइयां देला खूब बहार लोय ॥
अब की सावन में पहिने के चाहे जिया हमार लोय ।
बीदेशी कपड़ासब घर त्राकै अबकी देबैं जार लोय ॥

लेके झन्डा करब पिकेटिंक बनके सुन्दर नार लोय।
मारकन्डे शायर कै कजरी हम गाइब ललकार लोय॥

॥ कजली ॥ १० ॥

अबकी लिबास सब खद्दर कै हम बनवाइब ऐ गोइयाँ ॥टेक॥ सारी जैपुरकै हम छपल मगाइब ऐ गोइयाँ ॥ १ ॥ सूत कात चर्खा से हम बिनवाइब ऐ गोइयाँ ॥ २ ॥ अपने लड़िकन कै कुरता सियवाइब ऐ गोइयाँ ॥ ३ ॥ मारकन्डे शायर कै कजरी गाइब ऐ गोइयाँ ॥ ४ ॥

॥ कजली ॥ ११ ॥

हां हां हमहू जेहल में जइबै हां ॥

जैसे बलम काट अइलै जेहल वैसे हमहू पिकेटिंग में नमवा लिखइबै हां ॥टेक॥ झन्डा उठाइब सहेलियन के संगमें ॥ खद्दरकै सारी पहिन अपने अंगमें ॥ गाजा शराब बिकै नाही देइबै जाके दुकनिया पै सब के मनइबै हां ॥ १ ॥ आने जो अइहै उन्हे समझइबै, बर बादी कै घर उन्हे हम

बतइबै ॥ लेवै न देवै उन्हे मोरी गोइयां जइहै पलट जब उन्हे लजवइबै हां ॥ २ ॥ पकड़ी सिपाही तो हम नाहीं मानब, जइबै जेहल ठान अस हम ठानब ॥ जानबजेहल जैसे खेलबाड़ गोइयां हम दम नकिया के उनके लगइबै हां ॥३॥ हम देश खातिरमें जान लड़इबै, आजाद भारत के फिर से बनइबैं ॥ पीछे के नाही हटब मारकन्डे गोली के बरखा से हम न डेरइबै हाँ ॥ ४ ॥

॥ कजली ॥ १२ ॥

कहे थे गान्धी मोतीलाल से धूम मचाइब चरखा से। खास ठनल अबकी भारत स्वाधीन बनाइब चरखा से ॥ टेक ॥ गिरल दशा भारत कै हौ भाइन के जगाइब चरखा से। घर घर में हम हिन्दुस्तान के सूत कताइब चरखा से ॥ चली सुदर्शन चक्र सूत कै ढेर लगाइब चरखा से ॥ छिन आपन रोजगार लेब अस काम देखाइब चरखा से ॥ जगह हर जगह भारत में खद्दर चिन

वाइब चरखा से ॥ १ ॥ झेल झेल के बिपत देहि पर जेहल जाइब चरखा से। टर ब न बैठल जेहल में उनसे थर्राइब चरखा से ॥ ठट के मांगब स्वराज उनसे उन्हे सताइब चरखा से । डरब न हरगिज बादशाह के तख्त हिलाइब चरखा से ॥ ढेर करि है उत्पात तो धरके उन्हे दबाइब चरखा से ॥ २ ॥ तोड़ नमक कानून औ घरसाना लुट-वाइब चरखा से। थकब न उनकर गुलामी हम सबसे छोड़वाइब चरखा से ॥ देखा के करतब जज्ज कलेट्टर के अपनाइब चरखा से। धीरे धीरे माल बिदेशी सब रोकवाइब चरखा से ॥ ना मनि है भारत में भीख उनसे मगवाइब चरखा से ॥ ३ ॥ पलटन तोप रिसाला उनकर पीछे हटा इब चरखा से। फूट बैर आपस के छोड़ झन्डा फहराइब चरखा से ॥ बड़े बड़े जेहल के धर्मशाला करनाइब चरखा से। भारत में कर बीर बुजदि लन के लड़वाइब चरखा से ॥ मोहनचन्द्र से

गान्धी आपन नाम धराइब चरखा से ॥ ४ ॥ यकिन करके बाटी कहब हम उन्हे छकाइब चरखा से । रखके ताब हम हिन्दूस्तान कै स्वराज पाइब चरखा से ॥ लड़ब न उनसे तोप तमन्चा से हम भगाइब चरखा से ॥ सकूर कहते हरेक दर दंगल में गाइब चरखा से ॥ होगा मारकन्डे स्वराज जब उनसे सटाइब चरखा से ॥ ५ ॥

॥ कजली ॥ १३ ॥ तर्ज नौटंकी में

नगरी नगरी बखरी बखरी सनमान हमारे गान्धी का । नित वतन पर रहा जान कुरबान हमारे गान्धी ॥ टेक ॥ बहेर तबील-रंग गांन्धी का भारत में ऐसा हुआ उनपै बलिहार सारा शहर हो गया । रोज बा रोज झण्डा उठाने लगे गोया जादू सा सब पै असर हो गया ॥ रख रहे ताव कितने बशर सौख से दूर अब जेलखाने का डर हो गया ॥ रहो चल कर वही देश कारज करो इस समय जेल खाना तो घर हो गया ॥ नर नारी

सब मन से करे बखान हमारे गान्धी का ॥ १ ॥
बहेर तवील—मर रहे हिन्द वासी मुलुक हिन्द पै
मेरे भारत में ऐसा रसम हो गया ॥ मेल आपस
में मिल मिल के रखने लगे जारी सब में बन्दे
मातरम् होगया ॥ मन मगन कर मेरे हिन्द
के लखपति सहते तकलीफ क्या उनको गम हो
गया ॥ मातृ भारत के खातिर पड़े जेल में सोना
मखमल के ऊपर कसम हो गया ॥ निडर गान
करता है हिन्दुस्तान हमारे गान्धी का ॥ २ ॥
बहेर तवील—गान्धी का ज्ञान गौरव बढ़ा हिन्द में
लोग सरताज अपना बनाने लगे। गोल बांधे
हुये हर्ष अनुराग से राग दारी से क्या खूब
गाने लगे । गर मेरे ज्ञान गान्धी जेहल में
रहे क्या वो इंगलैन्ड में चैन पाने लगे ॥
गुन गुना हम सब हड़कम मचाने लगे जाके
जेहल में उनको मनाने लगे ॥ नहकार गये
सुनकर फौरन अरमान हमारे गान्धी का ॥ ६ ॥

बहेर तबील–रखे थे कौल रब जर्मने जंग में देंगे
स्वराज सो कौल टारे गये। रन के अन्दर बशर
लड़गये हिन्द के जर्मनि जंग में कितने मारे गये॥
रह गया रंगे शौकत मेरे शाह का कौल मांगा तो
क्या वाह मारे गये। रंज के बेहतरी से लड़े टेक
पर गान्धी आन्धी से दो तब हमारे गये॥ नथ के
छन्द किया मारकन्डे गुणगान हमारे गान्धी का॥४॥

॥ कजली ॥

गोद भारत का खाली किये हमारे मोतीलाल नेहरू।
रहे नैन के सबके तारे मोतीलाल नेहरू॥
गान्धी जी के रहे सहारे मोतीलाल नेहरू।
कोई बतादे कहा सिधारे मोती लाल नेहरू॥
मारकन्डे के सबके प्यारे मोती लाल नेहरू।

समाप्त

बाबू गौरीशंकर लाल बुकसेलर,
औसान गंज बनारस सिटी।

अर्जुन प्रेस, कबीरचौरा काशी।

छप गई ! नई नई पुस्तकें !! छप गई !!!

सुनहरी मौका न बिसारिये ! आइये और खरीदिये !! अवश्य खरीदिये !!!

सावनसती उर्फ पटनेकाशोर	)॥	स्त्री शिक्षक धर्म उ०	॥-)
सातसौ परी	≡)	नारी शिक्षा दर्पण	।)
सावन की सौगात	)॥	प्रेमकान्ता सन्तति पूरा	५)
प्रेमकान्ता उपन्यास पूरा	५)	जहरीली कलम	१)
कमल कुमारी	२)	स्त्री गीत बहार	-)॥
सावनस्वदेश उर्फ गौ पुकार	)॥	सावन सन्देश	)॥
सावन का सरदार	)॥	तिलिस्मी तहखाना उर्फ	
नारी धर्म उपन्यास	।)	कुमारी मधुमंजरी पहिला	
सावन का सहायक उर्फ मेला		खण्ड	॥)
घुमनी बेटी बेचवा की कजरी	)॥	कुअँर-कान्ता चारो भाग	॥)
सावन का सखा उर्फ महँगी		भारत दुर्दशा नाटक	॥)
का हास	)॥	पृथ्वीराज नाटक	॥)
बड़ी कजरी सावन सितारे		हकीकतराय नाटक	≡)
हिन्द	≡)	रामलीला नाटक	॥)
सावन का शहीद उर्फ—		विदेशिया नाटक	≡)
श्रद्धानन्द का हाल	)॥	कवित बजरंग विजय	।)
सावन की शुद्धी	)॥	कवित्त कुञ्जबहार	≡)
सावन संगी	)॥	सवैया शतक	≡)
नई कजरी ढुनमुनियां	)॥।	श्रीमती मंजरी नाटक	॥।)
सावन राजा	)॥	सती अनुसूइया	॥)
सावन स्वराज	)॥।	अमृत उपदेश	८)
सावन स्वदेश भारत	)॥।	जादू उर्फ नज़रबन्द	।)

विशेष हाल जानने के लिये हमारा बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगा कर देखिये ।

पता—गौरीशंकरलाल, औसानगंज, बनारस ।